अरहर का उकठा रोग पहचान :-

यह फ्यूजेरियम नामक कवक से फैलता है। यह पौधों में पानी व खाद्य पदार्थ के संचार को रोक देता है। जिससे पत्तियाँ पीली पड़कर सूख जाती है और पौधा सूख जाता है। इसमें जड़ें सड़कर गहरें रंग की हो जाती है। तथा हाल हटाने पर जड़ से लेकर तने की ऊँचाई तक काले रंग की धारियाँ पाई जाती है।

उपचार :-

1. जिस श्वेत में उक्ठा रोग का प्रकोप अधिक हो उस खेत में 3-4 साल तक अरहर की फसल नहीं लेना चाहिए।
2. ज्वार के साथ अरहर की सह फसल लेने से किसी हद तक उकठा रोग का प्रकोप कम हो जाता है।
3. ट्राईकोडरमा 4 ग्राम तथा 1 ग्राम कार्बोन्डाजिम बीज को उपचारित करना चाहिए।

अरहर का बन्झा रोग उपचार :-

1. कोई प्रभावकारी रसायनिक उपचार नहीं निकाला है।
2. जिस खेत में अरहर बोना हो उसके आसपास अरहर के पुराने एवं स्वयं उगे हुए पौधों को नष्ट कर देना चाहिए।

कम अवधि की अरहर की फसल में एकीकृत कीट प्रबन्धन :-

1. अरहर के खेत में चिड़ियों के बैठने के लिए बाँस की लकड़ी काा टी आकार का 10 खपच्ची प्रति हेक्टेयर के हिसाब से गाड़ दें।
2. शत प्रतिशत पौधों में फूल आ गये हो और फली बनना शुरू हो गया हो उस समय इन्डोसल्फन 0.07 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें।
3. प्रथम छिड़काव के 15 दिन पश्चात् एच०एन०पी०बी० का 500 एल०ई० प्रति हे० के हिसाब से छिड़काव करना चाहिए।

शोहरतगढ़ एन्वायरन्मेंटल सोसाइटी

-: प्रधान कार्यालय :-

9 प्रेमकुंज, आदर्श कालोनी शोहरतगढ़, सिद्धार्थनगर - 272205

-: रिजनल शाखा :-

एमएमआईजी 1/28 प्रथम तल, सेक्टर-ए सीतापुर रोड योजना, लखनऊ- 226021

-: सहयोगी संस्था :-

जमशेद जी टाटा ट्रस्ट, मुम्बई

Ptd. Shanker Offset Printers, S.Nagar, M.-9935282540

अरहर की खेती

अरहर की अकेली अथवा दूसरी फसलों के साथ सह फसली खेती की जाती है। ज्वार, बाजरा, उर्द और कपास अरहर के साथ बोई जाने वाली प्रमुख फसलें हैं।

उन्नतिशील प्रजातियाँ :-

अगैती प्रजातियाँ :-21-21 मानक, पारस, यू०पी०ए०एस० 120

देर से पकने वाली वाली प्रजातियाँ (260-275 दिन) :- टाईप-7, टाईप-17, बहार, अमर, नरेन्द्र अरहर-1, आजाद पूसा-9।

बुवाई का समय :-

देर से पकने वाली प्रजातियाँ जो लगभग 270 दिन में तैयार होती है, की बुवाई जुलाई माह में करनी चाहिए। शीघ्र पकने वाली प्रजातियों को सिंचित क्षेत्रों में जून के मध्य तक बो देना चाहिए जिससे यह फसल नवम्बर के अन्त तक पक कर तैयार हो जायें और दिसम्बर के प्रथम पखवारे में गेहूँ की